सहरसा जिले का नगरीय विकास

डॉ0 अजय कुमार
अतिथि शिक्षक भूगोल विभाग, जनता कोशी कॉलेज, बिरौल, दरभंगा (बिहार)

परिचय

कोसी प्रमंडल का मुख्यालय सहरसा, मध्य–पूर्वी उत्तरी बिहार में स्वतंत्रता के बाद तेजगति से बढ़ने वाला नगरीय क्षेत्र है। यह कोसी क्षेत्र के बढ़ते आर्थिक, समाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक विकास का केन्द्र है। जो दरभंगा, समस्तीपुर, मधुबनी, सुपौल, मधेपुरा और खगड़िया जिले से घिरा हुआ मिथिला संस्कृति का अनमोल धरोहर है। यह क्षेत्र 23.13 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ 2011 के अनुसार 156540 व्यक्ति नगरीय आबादी रखता है और प्रति वर्ग किलोमीटर नगरीय घनत्व 6768 व्यक्ति है। यह कृषि प्रधान क्षेत्र में स्थित सर्वाधिक तेज गति से बढ़ने वाला कृषि उत्पाद पर आधारित, व्यापारिक केन्द्र है। आर्थिक रूप से पिछड़े राज्य में स्थित होने के बाद भी 50 वर्षो में नगरीय आबादी 11 गुनी बढ़ी है। नगर में अनेक समस्या सड़क, नाला, पार्क ऊर्जा, जल निकासी, कचड़ा निस्तार, शौचालय, आवास, पेय–जल, शिक्षा और स्वास्थ्य की है। फिर भी निम्न जीवन स्तर जीते हुए भी पूर्णिया–कटिहार रेलमार्ग पर स्थित यह कलकत्ता–पटना महानगर को सेवा प्रदान करता है।

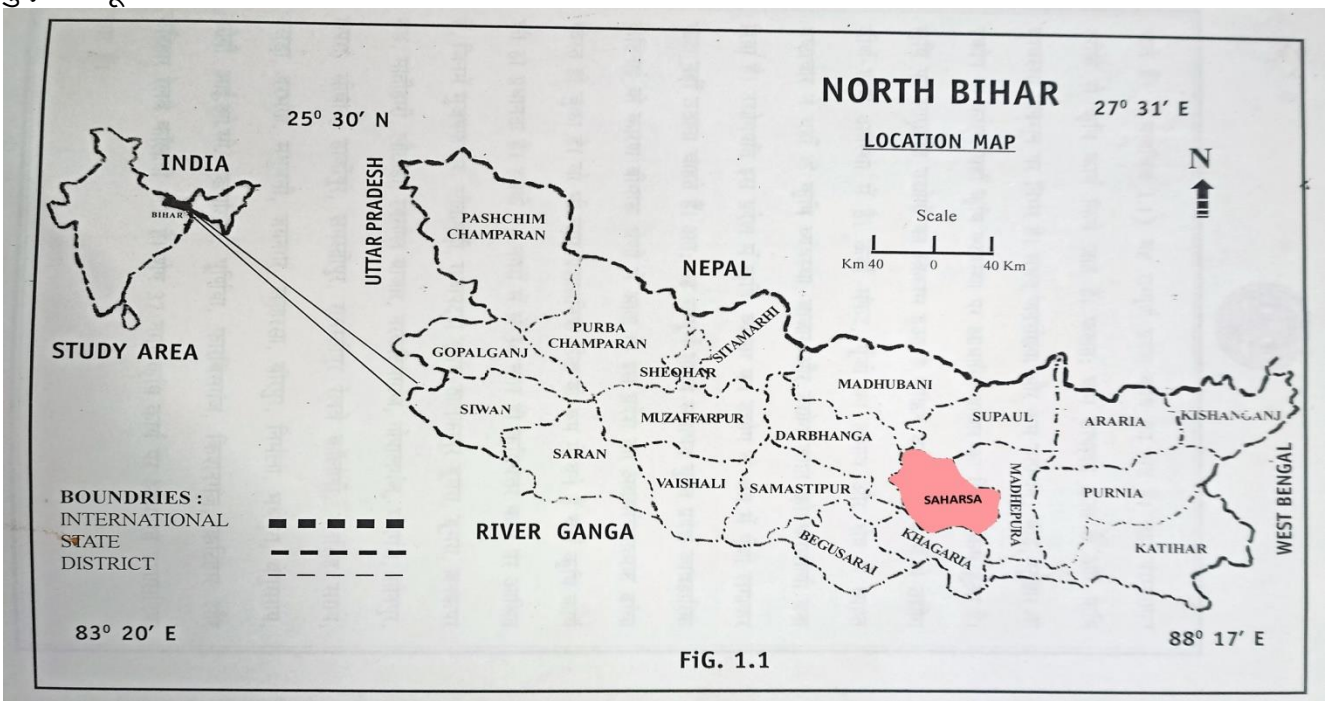

FiG. 1.1

अध्ययन का उद्देश्य

1961 में स्थापित सहरसा नगर साधारण नगर था। 50 वर्षो में यह प्रथम श्रेणी नगर बन गया। समस्या से जुझते हुए आर्थिक गति को बढ़ाया है। यहाँ से मानवशवित का सर्वाधिक पलायन हुआ है। बाढ़, सुखार से नुकसान होते हुए भी कृषि गत् विकास शोधकर्ता को आकर्षिक किया है। कृषि ही जीवन का आधार है। फिर भी नगरीय आबादी कृषि उत्पाद से जुड़े कुटीर उघोग, व्यापार के द्वारा जीविका चलाती है।

विधितंत्र

सहरसा नगरीय विश्लेषण में प्राथमिक और द्वितीयक आँकड़ो की प्रप्ति जनगणना विभाग पटना से की गयी है।

संकल्पना

सहरसा कृषि आधारित नगर है। यहाँ सुविधा का अभाव है। फिर भी इसे नगरीय साँचे में ढ़ालने का प्रयास किया जा रहा है। इसके निम्न आधार है :–

1. औद्योगिक नगर के अभाव में भी कृषिगत उत्वाद् से जुड़े उद्योग पनप रहे है।
2. व्यापार के कारण नगर का विस्तार हो रहा है।
3. बाढ़ का कारण गांव की आबादी नगरों में बसती जा रही है।
4. परिवाहन सुविधा से जुड़ाव के कारण नगर का तेजी से विकास हुआ है।

परिकल्पना

सहरसा नगर का फैलाव के पीछे निम्न विशेषताएँ है

1. सहरसा क्षेत्र में कृषि की प्रधानता है।
2. यहाँ की कृषि कम लागत और अधिक उत्पादन का स्त्रोत है।
3. कृषि आधारित उद्योग बढ़ रहे है।
4. नगरों की आत्मा ग्रामीण है और यह कृषि क्षेत्र से घिरा हुआ है।
5. यहाँ के नगरीय क्षेत्र में पदानुक्रम मिलता है।
6. नगर के बाहरी क्षेत्र का विकास दर कम होता गया है।
7. उच्च भागों में सघन आबादी और निम्न भागों में कम संघन है।

नगरीय विकास

इस नगर की स्थापना 1961 में प्रशासनिक नगर के रूप में की गयी थी। मानवीय और भौगौलिक परिस्थिति कहरा प्रखण्ड के इस अद्भूत नगरीय क्षेत्र सहरसा के अनुकूल थी। आज इस जिले की 8.24 प्रतिशत आबादी नगरों में रहती है। इसकी कुल नगरीय जनसंख्या 2011 के अनुसार 156540 व्यक्ति है और नगरीय घनत्व 6768 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। विभिन्न जनगणना वर्षो में विकास की गति इस प्रकार है।

तालिका 1.1 सहरसा जिले का नगरीय विकास

वर्ष	नगरीय क्षेत्र (वर्ग Km)	नगरीय आबादी	नगरीय घनत्व	लिंगानुपात प्रति Km
1961	8.69	14803	1701	735
1971	14.09	23217	1648	742
1981	17.13	57580	3009	793
1991	21.13	80147	3793	802
2001	21.13	124015	5869	881
2011	23.13	156540	6768	879

स्त्रोत :– सेन्सस ऑफ इण्डिया, बिहार पटना।

नगरीय कार्य संरचना

सहरसा नगर के लोगों के जीविका का मुख्य आधार व्यापार, प्रशासनिक सेवा, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन कृषि आधारित उद्योग, और बहुधंधी सेवा क्षेत्र का विस्तार ही आजीविका का साधन है। यह गैर कृषि कार्य पर आश्रित नगर है। इसकी कार्य कलापीय संरचना इस प्रकार है।

तालिका 1.2 सहरसा नगर की कार्यकलापीय संरचना (प्रतिशत में)

	1961	1971	1981	1991	2001	2011
कुल मुख्य श्रमिक	32.26	31.18	28.35	24.86	24.80	24.92
कृषक	11.56	11.73	16.82	18.61	18.00	19.20
कृषक मजदुर	9.07	18.23	26.74	21.58	22.30	23.50
खनिज उद्योग कर्मी	2.14	4.09	3.90	0.35	0.30	0.28
घरेलू उद्योग कर्मी	4.71	1.69	3.01	0.35	0.40	0.36
हस्त शिल्प व अन्य उद्योग कर्मी	8.49	1.88	2.10	2.96	2.40	2.95
निर्माण उद्योग कर्मी	2.93	5.00	5.20	2.38	2.35	2.10
वाणिज्य व्यापार कर्मी	13.17	18.32	21.30	18.71	18.20	19.30
यातायात परिवहन संचार कर्मी	9.87	9.82	10.10	3.88	3.10	3.60
अन्य सेवा कर्मी	38.08	29.18	30.1	34.71	37.10	38.20
गैर श्रमिक	61.74	68.82	70.78	78.06	71.66	72.18
सीमान्त श्रमिक	NA	NA	0.67	0.18	3.54	2.90

स्त्रोत :– सेन्सस ऑफ इण्डिया बिहार, पटना

आँकड़े बताते है कि सहरसा नगर के ढ़ाँचागत निर्माण में किन श्रमिकों का कितना योगदान है। अन्य सेवा कर्मी, कृषक, कृषक मजदुर और वाणिज्य व्यापार से जुड़े लागों की संख्या अधिक है। अन्य कार्य में कम लोग लगे हुए है।

नगरीय समस्या

सहरसा नगर अनेक समस्या से ग्रसित है। इस नगर का निर्माण गांव को कस्बा एवं कस्बे को नगर रूप में बदलने से हुआ है। यहाँ जैविक सड़क विन्यास मिलता है। जिससे सड़क–चौडीकरण, नाला–निकासी, सीवर निर्माण में काफी परेशानी होती है। फिर उच्चावच, बाढ़ के क्षेत्र होने से जल निकासी और साफ सफाई में काफी दिक्कत होती है। इस विन्यास में महत्वपूर्ण इमारतें मुख्य केन्द्र में होती है। सड़के, बक्राकार, खंडित कम अधिक चौड़ी, मार्ग परिवर्तनीय नदी, झील, टीलायुक्त होती है। कोसी नदी तट पर स्थित होने से सहरसा कोसी माई की देन एक मैदानी नगर है। नगर का प्राचीन बसाब उच्च भूमि पर है। बढ़ती जनसंख्या और ग्रामीण प्रावासी से निम्नभूमि पर बसाव बढ़ता जा रहा है। बाढ़ के समय, वर्षाकाल में इन क्षेत्रों में जल जमाब हो जाता है। शहर झीलनुमा आवास में परिणत दिखाई देता है। जिसमें जल निकासी की समस्या तथा पर्यावरण, स्वास्थ्य से जुड़े मामले बढ़ने लगते है। आवास, बिजली, यातायात परिवहन, ऊर्जा–स्त्रोत, घरेलू गैस, गंदी बस्ती ने आज सहरसा के नगरीय चकाचौध को कष्ट्रप्रद बना दिया है।

नियोजन

1. सहरसा नगर –नियोजन में शहरी विकास प्राधिकार ने नये ढ़ंग से आधुनिक शहर विस्तार में रिंग रोड़, मुख्य मार्ग से तीव्र पथ मार्ग को जोड़ा है। मन्द गति वाहन और पैदल मार्ग को अलग चिन्हित किया है। क्रांसिग पर रेड लाईट, ओवर ब्रीज से नगर के सभी मार्ग को एक–दूसरे से जोड़ दिया है।
2. कल–कारखाने, किनारे–किनारे हरित वन लगाये है।
3. नगरों को कार्य क्षेत्र के आधार पर विभाजित किया है।
4. शहरी पदानुक्रम, आवास कॉलोनी रियायसी सामान्य एवं मजदूर वर्गानुसार विभाजित मिलने लगे है।
5. सार्वजनिक स्थानों, शिक्षण केन्द्र, स्वास्थ्य केन्द्र, प्रशासनिक केन्द्र, व्यापारिक केन्द्र, परिवहन केन्द्र इत्याचि में विभाजित है और व्यवस्थित मिलते है।
6. स्वच्छता सफाई जल निकासी जलापूर्ति के लिए भावी नगर विकास प्लान को सुरक्षित रखा गया है।
7. ऊर्जा, सुरक्षा, यातायात परिवहन की सुविधा और नवसृजित रोजगार के अवसर ही नगर को जीवन्त बनाये हुए है।
8. आज सहरसा के उप नगर सिमरी बख्तियारपुर का विकास भी तेजी से हो रहा है सहरसा नगर के बढ़ते दबाब को कम किया है।
9. सहरसा नगर में गंदी बस्ती के फैलाव को रोकना, उनके बीच रोजगार के अवसर को बढ़ाना, ताकि बदहाल नगरीय जीवन न हो सके। इससे शहरी जीवन सुखमय बना रहता है।

सुझाव

1. सहरसा नगर का आर्थिक संरचना, कृषि, व्यापार, उद्योग, परिवहन का मिला जुला रूप है। इसे गति प्रदान करने की जरूरत है।
2. इस नगर की मुख्य समस्या सड़क मार्ग की है। जल–जमाब के कारण प्रतिवर्ष टूट जाते है और नगर गांव का सम्पर्क टूट जाता है। जल जमाव, बाढ़ और ट्राफिक जाम मुख्य तीन समस्या है। जिसें सीवर निर्माण, ओवर ब्रीज पूल बनाकर दूर किया जा सकता है। रिंग रोड शहरी दबाब को कम कर सकता है।
3. सड़क चौडीकरण पैदल पथ रोशनी प्रबन्ध सुरक्षा रेड लाइट सड़क किनारे पार्किंग सुविधा से नगर की सुन्दरता बढ़ती है तथा सफाई नियमित होने से नगर स्वास्थ्यप्रद बनता है।

निष्कर्ष

सहरसा नगर युवास्था में है और समस्या से ग्रसित है। इसे औद्योगिक व्यापारिक नगर बनाकर ही अधिक कार्य क्षमतायुक्त, सुदृढ़ किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.डॉ इनायत अहमद – बिहार का भूगोल, रांची पब्लिकेशन रांची।
2.डॉ विश्वनाथ प्रसाद – बिहार का भूगोल, बसुन्धरा पब्लिकेशन, पटना।
3.सेन्सस ऑफ इण्डिया – बिहार पटना 1901–2011
4.जिला गजेटियर बिहार पटना 1901–2011
5.सांख्यिकी विभाग से प्राप्त आँकड़े, बिहार सरकार, पटना
6.दैनिक समाचार पत्र– दैनिक जागरण, हिन्दूस्तान
7.प्रभात खबर, दैनिक भास्कर से प्राप्त जानकारी